काव्य कनिका

पाठ्य-पुस्तक

बी.ए/बी.एफ.ए/बी.एस.डब्ल.यू.,/बी. म्यूजिक., बी.वी.ए
बी.ए.(आनर्स) तथा एस.ई.पी अधीन सभी बी.ए कोर्स
(B.A/B.F.A/B.S.W/ B. Music., B.V.A & B.A.(Hon) and All B.A Course Language under SEP for the year 2024-25 onwards)

द्वितीय सेमिस्टर/ II SEMESTAR

संपादक
डॉ. शेखर
डॉ. नीता हिरेमठ
डॉ. शर्मिला बिश्वास

प्रकाशक
प्रसारांग
बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

KAVYA KANNIKA

Edited by:
Dr. Shekhar
Dr. Neeta Hiremath
Dr. Sharmila Biswas

@बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय
प्रथम संस्करण – 2021

Pages: 52

प्रधान संपादक
डॉ. शेखर

मूल्य :-

प्रकाशक
प्रसारांग
बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरू – 560001

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2024-25 शैक्षिक वर्ष से एस.ई.पी नियम (पद्धति) के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए नया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा हैं।

इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात् हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण और सराहना कैसे किया जाए और दिये गये पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए, ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके। जैसे विज्ञान और आदि विषयों के अध्ययन के साथ यह भी अधिक उपयोगी हैं। एस.ई.पी सेमिस्टर पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया हैं।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी अध्ययन-मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किया है।

विश्वास है कि यह काव्य संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्रीय विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

डॉ. लिंगराज गांधी
कुलपति
बेंगलूर नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

प्रधान संपादक की कलम से......

बेंगलूरू नगर विश्वविध्यालय शैक्षिक क्षेत्र में नये-नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को नयी राज्य शिक्षा नीति के अनुसार प्रस्तुति करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एस.ई.पी सेमिस्टर पध्दति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले सम्पादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इस नयी पाठ्य पुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय डॉ. लिंगराज गांधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस पाठ्यक्रम को नयी शिक्षा नीति के ध्येयोद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। काव्य के विविध आयामों को इस पाठ्य पुस्तक में शामिल किये गए हैं। आशा है कि सभी विद्यार्थीगण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष (बी.ओ.एस)
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	कविता	कवि	पृ. सं
1.	प्रेमामृत	~ मीराबाई	05-09
2.	दोहे	~ रहीम	10-14
3.	चलना हमारा काम है	~ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’	15-20
4.	संयुक्त परिवार	~ राजेश जोशी	21-25
5.	देशगान	~ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	26-29
6.	जीवन - भूमि का युद्ध	~ डॉ. रामनिवास 'मानव'	30-33
7.	पाषाणी	~ नागार्जुन	34-40
8.	खत	~ गिरिजाकुमार माथुर	41-46
9.	कात्यायनी की कविताएँ	~ कात्यायनी	47-48
	1. सामान्यता की शर्त		49-50
	2. सफल नागरिक		51-52
10.	सबसे ज़रूरी सवाल यही है	~ अरुण कमल	53-56

1. “प्रेमामृत”

~ मीराबाई

कवि-परिचय:~

मीराबाई – (जन्म: 1498 ई., मृत्यु: 1547 ई.) भगवान श्रीकृष्ण की एक महान भक्त थी जिन्हें “राजस्थान की राधा” भी कहा जाता है। मीरा एक अच्छी गायिका, कवि व संत भी थी। उसका जन्म मध्यकालीन राजपूताना (वर्तमान राजस्थान) के मेड़ता शहर के कुड़की ग्राम में हुआ था। मीरा को बचपन से ही भगवान श्री कृष्ण के प्रति मोह हो गया था। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इसी मोह के कारण वे उनकी भक्ति में जुट गई और आजीवन भक्ति में लीन रही। आज मीराबाई को महान भक्तों में से एक गिना जाता है।

मीराबाई का जन्म 1498 ई. में मेड़ता के राठौड़ राव दूदा के पुत्र रतन सिंह के यहाँ कुड़की गांव, मेड़ता (राजस्थान) में हुआ था। मीरा के पिता रतनसिंह राठौड़ एक जागीरदार थे तथा माता वीर कुमारी थी। मीरा का पालन पोषण उसके दादा-दादी ने किया। उसकी दादी भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त थी जो ईश्वर में अत्यंत विश्वास रखती थी।

मीरा दादी माँ की कृष्ण भक्ति को देखकर प्रभावित हुई। एक दिन जब एक बारात दूल्हे सहित जा रही थी तब बालिका मीरा ने उस दूल्हे को देखकर अपनी दादी से अपने दूल्हे के बारे में पूछने लगी। तो दादी ने तुरंत ही गिरधर

गोपाल का नाम बता दिया और उसी दिन से मीरा ने गिरधर गोपाल को अपना वर मान लिया।

मीराबाई का विवाह 1516 ई. में मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज सिंह के साथ हुआ था। भोजराज उस समय मेवाड़ के युवराज थे। विवाह के एक-दो साल बाद 1518 ई. में भोजराज को दिल्ली सल्तनत के खिलाफ युद्ध में जाना पड़ा। 1521 में महाराणा सांगा व मुगल शासक बाबर के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा की हार हुई जिसे खानवा के युद्ध के नाम से जाना जाता है। खानवा के युद्ध में राणा सांगा व उनके पुत्र भोजराज की मृत्यु हो गई।

'प्रेमामृत' में मीराबाई के कुछ विशिष्ट पद प्रस्तुत किये गये हैं। मीरा 'हरि अविनासी' को समर्पित थीं। उनकी भक्ति में प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, व्याकुलता आदि व्यापार पाये जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार उनके सब पदों में 'प्रेम की तल्लीनता' पाई जाती है। उनका कृष्ण प्रेम निर्मल एवं प्रगाढ़ है। मीरा और कृष्ण का संबंध मधुर तथा चिरंतन है। उनकी विरह- वेदना तीव्र एवं अपार है। उनका प्रेम मांसल नहीं, आत्मिक और आध्यात्मिक है।

~#~#~

“प्रेमामृत”

~ मीराबाई

रामरतन धन पायौ मैया, मैं तो रामरतन धन पायौ।
खरचे न खूटे, वाकुँ चोर न लूटे, दिन दिन होत सवायौ।
नीर न डूबे, वाकुँ अग्नि न जाले, धरणी धर्यो न समायौ।
नाँव को नाँव भजन की बतियाँ, भवसागर से तारयौ ।
मीराँ प्रभु गिरिधर के सरणे, चरण-कँवल चित लायौ ॥1॥

मैं गिरिधर के घर जाऊँ ।
गिरिधर म्हाँरौ साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।।
रैण पड़े तब ही उठि जाउँ, भोर भये उठि आऊँ ।
रैणदिनाँ वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ-त्यूँ वाहि रिझाऊँ ।।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उण की प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊँ ।।
जहाँ बिठावे तितही बैठूं, बेंचै तो बिक जाऊँ ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ ॥2॥

बदरा रे तू जल भरि लै आयौ ।

छोटी-छोटी बूँदन बरसन लागी, कोयल सबद सुनायौ।

गाजै-बाजै पवन मधुरिया, अंबर बदराँ छायौ ।

सेज सँवारी पिय घर आए, हिल-मिल मंगल गायौ ।

मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, भाग-भलौ जिन पायौ ।।3।।

स्याम-बिना सखि, रह्याँ ना जावाँ ।

तन-मन-जीवन प्रीतम वाँ, थारे रूप लुभावाँ ॥

खानपान म्हाँनें फीका लागाँ, नैना रह्याँ मुरझावाँ ।

निसि दिन जोवाँ बाट मुरारी, कब रो दरसन पावाँ ।।

बार-बार थारी अरज करूँ हूँ, रैन गया दिन जावाँ ।

'मीराँ' रे हरि थे मिल्या बिन, तरस-तरस जिय जावाँ ।।4।।

जोगी मत जा, मत जा, मत जा ।

पाँइ परू, मैं चेरी तेरी हौं, जोगी मतं जा, मत जा ।।

प्रेम-भगति कौ पैड़ौ ही न्यारौ, हमकूँ गैल बता जा ।

अगर चंदण की चिता बनाऊँ, अपणे हाथ जला जा ॥

जल-बल भई भई भसम की ढेरी, अपने अंग लगा जा।

मीराँ कहै प्रभु गिरिधर नागर, जोत में जोत मिला जा॥5॥

~#~#~

कठिन शब्दार्थ

1) रामतन - राम-नाम रूपी रत्न, खूटे- कम होता है, वाँकु – उसको, होत सवायो – बढ़ता है, धरणी जमीन, सरणें शरण में, चित लायौ - मन लगाना

2) म्हाँरौ – मेरा, रैण - - वहीं। बेंचे - बेचै - रात, वाके - उसके, वाहि - उसे, तितही

3) बदरा - बादल, अंबर- आकाश, भाग भलौ जिन पायौ – पानेवाले का भाग्य बड़ा है।

4) वाऱ्या- अर्पित करना, निछावर करना; थारे रूप - म्हाँनें - हमें तुम्हारा सौंदर्य,

5) पाँइ परू- पैरों पर पहुँ, चेरी- दासी, पैंड़ों- मार्ग, गैल चंदण - चन्दन की लकड़ियाँ, जोत - ज्योति, आत्मा रास्ता,

~#~#~

2. “रहीम के दोहे”

~ रहीम

कवि-परिचय:~

रहीम दास जी का पूरा नाम अब्दुल रहीम खान-ए-खाना है और इनका जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहोर में हुआ था। जो लाहोर अभी पाकिस्तान में स्थित है। इनके पिता का नाम बैरम खान और माता का नाम सुल्ताना बेगम था।

रम खान एक तुर्की परिवार से थे और हुमायूँ की सेना में शामिल हो गये थे। बैरम खान अकबर किशोरावस्था में सरंक्षक के रूप में भी थे। बैरम खान ने हुमायूँ की मुगल साम्राज्य को वापस स्थापित करने में सहायता की थी।

रहीम दास जी का पूरा नाम अब्दुल रहीम खान-ए-खाना है। रहीम दास जी एक कवि के साथ-साथ अच्छे सेनापति, आश्रयदाता, दानवीर, कूटनीतिज्ञ, कलाप्रेमी, साहित्यकार और ज्योतिष भी थे।

रहीम दास जी मुगल बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम दास जी अपने हिंदी दोहों से काफी मशहूर भी थे और इन्होने कई सारी किताबें भी लिखी थी। इनके नाम पर पंजाब में एक गांव का नाम भी खानखाना रखा गया है।

~#~#~

“रहीम के दोहे”

~ रहीम

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय ।
टूटे से फिर ना मिले, मिले तो गाँठ पड़ जाय ॥1॥

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय ॥2॥

जो मरजाद चली सदा, सोई तौ ठहराय।
जो जल उमगैं पार तें, सो रहीम बहि जाय ॥3॥

रहिमन कठिन चितान तैं, चिता को चित चैत ।
चिता दहति निर्जीव को, चिन्ता जीव समेत ॥4॥

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ॥5॥

एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिवो, फूलहि फलहि अघाय ॥ 6 ॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

बिपति कसौटी जे कसे, सोही साँचे मीत ॥ 7 ॥

रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय।

राग सुनत पय पियत हूँ, साँप सहज धरि खाय ॥ 8 ॥

बड़े बड़ाई ना करै, बड़े न बोलें बोल।

रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरौ मोल ॥ 9 ॥

रहिमन नीचन संग बसी, लगत कलंक न काहि।

दूध कलारिन हाथ लखि, सब समुझहि मद ताहि ॥10 ॥

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।

जान परत हैं काक पिक, ऋतु वसंत के माहिं ॥11॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहिगै सरग पताल।

आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ॥12॥

रहिमन तब लगि ठहरिए, दाव मान सनमान।

घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान ॥13॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुणा तीन।

जैसी संगति बैठिये, तैसोई फल दीन ॥14॥

कैसे निबहै निबल जन, करि सबलन सों वैर।

रहिमन बसि सागर विषै, करत मगर सों बैर ॥15॥

जेही 'रहीम' मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।

निसि बासर लाग्यो रहै, कृष्णचन्द्र की ओर ॥16॥

जो जानत सो कहत नहिं, कहत सो जानत नाहिं।

राम नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपादि ॥17॥

कह रहीम तिहि आपुनो, जनम गँवायो बादि।

'रहिमन' राम न उर धरै, रहत विषय लपिटाइ ॥18॥

समय दशा कुल देखि कै, लोग करत सनमान।

'रहिमन' दीन अनाथ के, तुम बिन को भगवान ।।19।।

जो 'रहीम' तनु हाथ है, मनसा कहूँ किन जाहिं।

जलमें क्यों छाया परे, काया भीजति नाहिं ।।20।।

~#~#~

3. “चलना हमारा काम है।“

~ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’

कवि-परिचय:~

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगरपुर में हुआ था। वे रीवा, ग्वालियर आदि स्थानों मे रहकर आरम्भिक शिक्षा प्राप्त की है | एक अग्रणी हिंदी लेखक और कवि थे। उन्होंने एक एम ए और पी एच.डी. अर्जित किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में उन्हें 1950 में डी. लिट. के साथ भी सम्मानित किया गया।

सुमन ने 1968-78 के दौरान विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन) के कुलपति के रूप में काम किया; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के उपराज्यपाल ; 1956-61 के दौरान प्रेस और सांस्कृतिक अटैच, भारतीय दूतावास, काठमांडू (नेपाल); और 1977-78 के दौरान अध्यक्ष, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (नई दिल्ली) रहे। वह कालिदास अकादमी, उज्जैन के कार्यकारी अध्यक्ष थे। 27 नवंबर 2002 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और शिक्षाविद थे। उनकी मृत्यु के बाद, भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री ने कहा, "डॉ. शिव मंगल सिंह 'सुमन' केवल हिंदी कविता के क्षेत्र में एक शक्तिशाली चिह्न ही नहीं थे,

बल्कि वह अपने समय की सामूहिक चेतना के संरक्षक भी थे। उन्होंने न केवल अपनी भावनाओं का दर्द व्यक्त किया, बल्कि युग के मुद्दों पर भी निर्भीक रचनात्मक टिप्पणी भी की थी।"

(कवि शिवमंगल सिंह सुमन जी द्वारा रचित कविता 'चलना हमारा काम है' कविता के माध्यम से हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि हमें कभी भी अपने कर्तव्य के मार्ग से भटकना नहीं चाहिए। चाहे उसके लिए हमें कितनी भी समस्याओं का सामना करना पड़े फिर भी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कवि कहते हैं कि जब हमारे पैरों में इतनी गति है तो फिर क्यों बेकार खड़े रहकर वक्त की बर्बादी करे, जब की आगे बढ़ने के लिए हमारे सामने सैकड़ों रास्ते पड़े हैं। किसी एक मंजिल की राह चुनकर हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए। जब तक वह मंजिल नहीं मिलती तब तक हमें रुकना नहीं है। एवं निरंतर आगे चलते रहना ही हमारा काम है। यह जीवन आशा निराशा से घिरा है कभी रोना है तो कभी हंसना है। इस संसार रूपी सागर में भला किसको नहीं बहना पड़ा, सभी को सुख-दुख झेलना ही पड़ा है। इस बात के लिए हम विधाता को भी दोष नहीं दे सकते। पूर्णता की खोज में मनुष्य दर-दर भटकता रहता है। प्रत्येक पग पर मनुष्य को कुछ न कुछ बाधाओं का सामना करना ही पड़ता है। लेकिन मनुष्य को निराश न होकर उस बाधाओं का सामना करना चाहिए। कवि कहते हैं कि यही तो जीवन है। चाहे कितनी भी बाधाएं आए हमें सिर्फ मंजिल की राह पर

चलते जाना है। कभी रुकना नहीं है। कवि कहते हैं कि कुछ लोग अपने लक्ष्य की ओर चलते ही जाते हैं और कुछ लोग बीच में ही मंजिल छोड़ देते हैं। जो लोग राह छोड़ यूं ही बैठे रहते हैं उन्हें सफलता कभी हासिल नहीं होती। और जो लोग अपनी राह पर चलते जाते हैं उन्हें सफलता अवश्य प्राप्त होती है। इसीलिए हमें जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो तब तक चलते जाना है।)

~#~#~

“चलना हमारा काम है।“

~ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’

गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यों रहूं दर दर खड़ा
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा
जब तक न मंजिल पा सकूँ,
तब तक मुझे न विराम है,
चलना हमारा काम है।

कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया
कुछ बोझ अपना बँट गया
अच्छा हुआ, तुम मिल गई
कुछ रास्ता ही कट गया
क्या राह में परिचय कहूँ,
राही हमारा नाम है,
चलना हमारा काम है।

जीवन अपूर्ण लिए हुए
पाता कभी खोता कभी
आशा निराशा से घिरा,
हँसता कभी रोता कभी
गति-मति न हो अवरुद्ध,

इसका ध्यान आठो याम है,
चलना हमारा काम है।

इस विशद विश्व-प्रहार में
किसको नहीं बहना पड़ा
सुख-दुख हमारी ही तरह,
किसको नहीं सहना पड़ा
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ,
मुझ पर विधाता वाम है,
चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
निराशा क्यों मुझे?
जीवन इसी का नाम है,
चलना हमारा काम है।

साथ में चलते रहे
कुछ बीच ही से फिर गए
गति न जीवन की रुकी
जो गिर गए सो गिर गए
रहे हर दम,
उसी की सफलता अभिराम है,
चलना हमारा काम है।

फकत यह जानता
जो मिट गया वह जी गया
मूंदकर पलकें सहज
दो घूँट हँसकर पी गया
सुधा-मिश्रित गरल,
वह साकिया का जाम है,
चलना हमारा काम है।

~#~#~

4. “संयुक्त परिवार”

~ राजेश जोशी

कवि-परिचय:~

राजेश जोशी साहित्यकार, अनुवादक, कहानीकार, कवि, नाटककार, पटकथाकार, सम्पादक आदि बहु आयामी के रूप में साठोत्तर साहित्यकारों में पहचान बनी हुई है। राजनीतिक चेतना तथा मार्क्सवादी चेतना उनकी कविता का प्रमुख स्वर है। उनकी कविता, समय, स्थल और गतियों के अछूते संदर्भों से भरी हुई है। उनके काव्य संग्रह हैं- एक दिन बोलेंगे पेड़, मिटटी का चेहरा, नेपथ्य में हँसी। कहानी संग्रह हैं- सोमवार और अन्य कहानियाँ। उनके नाटक हैं जादू जंगल, अच्छे आदमी, टंकरा का गाना आदि। उनको माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा सम्मान, शमशेर सम्मान और पहल सम्मान प्राप्त है।

संयुक्त परिवार: कल की बात हुई। छोटे से घर में माता-पिता, भाई-बहन, बेटे-बहुएँ हंसी-खुशी से रहते थे। अतिथि की पूछताछ की जाती, पड़ोसियों के साथ स्नेह सिक्त व्यवहार किया जाता था। युग बदला, परिवेश टूट गए। अब ईन-मीन-तीन लोग बहुत सारे कमरों में रहने लगे हैं। तीनों बाहर चले जाते तो आनेवाले को ताला देखकर वापस लौटना पड़ता है या ताले में पर्ची खोसकर जाना पड़ता है। संयुक्त परिवार की संकल्पना फोटो अलबम में बाकी रह गयी है। स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, लगाव, अपनापन,

विश्वास, सहयोग, रिश्ते-नाते की बुनियाद पर परिवार टिका रहता था, किन्तु आज यह बुनियाद ही हिल गई है। टूटते हुए मूल्यों के बीच जीवन के बिखराव में मनुष्य स्वयं को ढूँढ रहा है। आज के मनुष्य का बिखराव, अकेलापन, टूटन, अजनबीपन, संत्रास, घुअन, कविता की मूल संवेदना है।

~#~#~

“संयुक्त परिवार”

~ राजेश जोशी

मेरे आने से पहले ही कोई लौट कर चला गया है,
घर के ताले में उसकी पर्ची खुसी है।

आया होगा न जाने किस काम से वह
न जाने कितनी बातें रही होंगी मुझसे कहने को
चली गयी हैं सारी बातें भी लौट कर उसी के साथ
रास्ते में हो सकता है कहीं उसने पानी तक न पिया
सोचा होगा शायद उसने कि यही मेरे साथ पियेगा चाय
कैसा लगता है इस तरह किसी का घर से लौट जाना

इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा
बचपन के उस पैतृत घर से
वहाँ बाबा थे, दादी थी, माँ और पिता थे
लड़ते-झगड़ते भी साथ-साथ रहते थे सारे भाई बहन
कोई न कोई हर वक्त बना ही रहता था घर में
पल दो पल को बिठा ही लिया जाता था हर आने वाले को
पूछ लिया जाता था गुड और पानी को

खबर मिल जाती थी बाहर गए आदमी की
ताला देखकर शायद ही कभी कोई लौटा होगा घर से
टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ
अब इस घर में रहते हैं इन मीन तीन जन
निकलना हो कहीं तो सब निकलते हैं एक साथ ।
घर सूना छोड़ कर
यह छोटा सा एकल परिवार
कोई एक बाहर चला जाये तो दूसरों को
काटने को दौड़ता है घर

नये चलन ने बहुत सहूलियत बख्शी है चारों को
कहाँ हो रहा है मिलना जुलना
कम हो रही है लोगों की जान पहचान
सुख दुख में भी पहले की तरह इकट्ठे नहीं होते लोग
तार से आ जाती है बधाई और शोक संदेश।

बाबा को जानता था सारा शहर
पिता को भी चार मोहल्ले के लोग जानते थे
मुझे नहीं जानता मेरा पड़ोसी मेरे नाम से

अब सिर्फ एलबम में रहते हैं

परिवार के सारे लोग एक साथ

टूटने की इस प्रक्रिया में क्या क्या टूटा है

कोई नहीं सोचता

कोई ताला देखकर मेरे घर से लौट गया है।

~#~#~

5. “देशगान”

~ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

कवि-परिचय:~

(जन्म: 15 सितम्बर, 1927; मृत्यु: 23 सितम्बर, 1983)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार थे। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना 'तीसरे सप्तक' के महत्वपूर्ण कवियों में से एक थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने कहानी नाटक और बाल साहित्य भी रचा। उनकी रचनाओं का अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। आकाशवाणी में सहायक निर्माता; दिनमान के उपसंपादक तथा पराग के संपादक रहे। यद्यपि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का साहित्यिक जीवन काव्य से प्रारंभ हुआ तथापि ‘चरचे और चरखे’ स्तम्भ में दिनमान में छपे आपके लेख विशेष लोकप्रिय रहे। सन 1983 में कविता संग्रह ‘खूँटियों पर टंगे लोग’ के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया।

समकालीन हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता में जहां तक जनता से जुड़े क़लमकारों का सवाल है, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अपनी बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा के साथ एक जवाब की तरह सामने आते हैं। कविता हो या कहानी, नाटक हो या पत्रकारिता, उनकी जन प्रतिबद्धता हर मोर्चे पर कामयाब है।

इसके अलावा सर्वेश्वर ने प्रख्यात कवि शमशेर बहादुर सिंह पर केन्द्रित शमशेर का संपादन भी किया।

उन्होंने नेपाली कविताएं शीर्षक से एक काव्य संग्रह का भी संपादन किया। उन्होंने यात्रा संस्मरण भी लिखे, जो कुछ रंग-कुछ गंध नाम से छपकर आया है। बच्चों के लिए उन्होंने काफ़ी साहित्य लिखा। उनके दो बाल कविता संग्रह 'बतूता का जूता' एवं 'महंगू की टाई' नाम से छप चुके हैं।

~#~#~

“देशगान”

~ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

क्या गजब का देश है, यह क्या गजब का देश है।
बिन अदालत औ मुवक्किल के मुकदमा पेश है।
आँख में दरिया है सबके
दिल में है सबके पहाड़
आदमी भूगोल है जी चाहा नक्शा पेश है।
क्या गजब का देश है यह क्या गजब का देश है।

हैं सभी माहिर उगाने
में हथेली पर फसल
औ हथेली डोलती दर-दर बनी दरवेश है।
क्या गजब का देश है यह क्या गजब का देश है।

पेड़ हो या आदमी
कोई फरक पड़ता नहीं
लाख काटे जाइए जंगल हमेशा शेष हैं।
क्या गजब का देश है यह क्या गजब का देश है।

प्रश्न जितने बढ़ रहे
घट रहे उतने जवाब
होश में भी एक पूरा देश यह बेहोश है।
क्या गजब का देश है यह क्या गजब का देश है।

खूँटियों पर ही टँगा
रह जाएगा क्या आदमी ?
सोचता, उसका नहीं यह खूँटियों का दोष है।
क्या गजब का देश है यह क्या गजब का देश है।

~#~#~

6. “जीवन - भूमि का युद्ध।“

~ डॉ. रामनिवास 'मानव'

कवि-परिचय:~

श्री रामनिवास 'मानव' (1954-) जन्म 8 अक्तूबर सन् 1954 को तिगरा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में। शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), पी.एच.डी. डी.लिट्.,

कृतियों - 'धारा-पथ', 'रश्मि-रथ', 'सांझी है रोशनी', 'बोलो मौ राम', 'सहमी-सहमी आग', 'शेष बहुत कुछ', 'केवल यही विशेष', 'कविता में उत्तरांचात' (कविता संग्रह), 'हम सब हिन्दुस्तानी', 'आओ गाओं बच्चा', 'मुन्ने राजा आज', 'लो सुनो कहानी' (बालगीत संग्रह), 'घर लौटते कदम', 'इतिहास गवाह है' (लघुकथा-संग्रह)। हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य तथा 'हरियाणा में रचित हिन्दी- महाकाव्य (शोध प्रबन्ध) सहित कुल अट्ठाईस महत्वपूर्ण कृतियाँ।

पुरस्कार : हरियाणा साहित्य अकादमी पुरस्कार, डॉ. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड, राष्ट्रीय हिन्दी-सेवी सहस्राब्दी सम्मान, नागरी संवर्द्धन-सम्मान, साहित्य-गौरव सम्मान, वाग्विदांवर सम्मान, राष्ट्रीय सृजन-सम्मान आदि पचास अमुख संस्थाओं द्वारा सम्मानित और आदि।

सारांश : *('जीवन भूमि का युद्ध' के कवि रामनिवास 'मानव' है। इस कविता में कवि में मनुष्य जीवन को युद्ध की संज्ञा दी हैं। कवि के अनुसार यह संसार युद्ध भूमि है और हार आदमी एक योद्धा। आदमी जन्म से मृत्यु तक अनवरत लड़ाई लड़ता है। वह लड़ता है असत्य, अनीति, अधर्म, अहम्, अनास्था और अकर्म से बिस्तर। हर आदमी के खून में एक आग छुपी होती है, उस आग की शक्ति के बल पर धरती से आकाश तक उठ सकता है। लेकिन जीवन के महाभारत में कभी-कभी वे इतना विरक्त हो जाते है कि एक भी नयी भगवद् गीता का जन्म होता है। युद्ध चाहे मनुष्य के भीतर हो या बाहर कायर हमेशा हारते हैं। युद्ध में कही योद्धा जीतते है जो भूखे प्यासे रह कर भी अपनी लड़ाई सिंगार जारी रखते हैं।)*

~#~#~

“जीवन - भूमि का युद्ध।“

~ डॉ. रामनिवास मानव

विश्व यह एक युद्ध भूमि है,
और हर आदमी एक योद्धा ।
जन्म से मृत्युपर्यन्त
लड़ता ही रहता है आदमी
असत्य से, अनीति से, अधर्म से,
अहं से, अनास्था, अकर्म से ।

हर आदमी की रगों में
छुपी होती है आग शक्ति की
अपरिमित और असीम,
जिसके बल से वह उठ सकता है
धरती से आकाश तक,
मनुज में देवत्व के विश्वास तक ।

पर जीवन के महाभारत में

कभी-कभी वह सम्मोहित हो

आसक्ति की शक्ति से,

भर जाता है विरक्ति से ।

तब होता है जन्म

एक नई भगवद्गीता का ।

पुद्ध, हो चाहे आदमी के

अन्तःपटल पर या भूपटल पर,

कावर हमेशा हारता है.

और जो भूखा-प्यासा रहकर

लड़ता है, जीतता है अन्ततः

वहीं हर युद्ध इस भू पर !

~#~#~

7. “पाषाणी”

~ नागार्जुन

कवि-परिचय:~

नागार्जुन का जन्म सन् 1911 में बिहार के दरभंगा जिले के तरौनी ग्राम में हुआ था। नागार्जुन के पिता का नाम ‘गोकुल मिश्र’ तथा माता का नाम ‘उमा देवी’ था। काशी और कलकत्ता में उन्होंने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया।

कवि नागार्जुन भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। नागार्जुन प्रगतिवादी युग के कवि हैं। नागार्जुन जी को शुरु से ही संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, पाली, आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था । उन्होंने अपनी महान विचारधारा को बेहद सहजता और सरलता से अपनी रचनाओं में प्रकट किया है।

प्रसिद्ध रचनाएँ: कविता-संग्रह - युगधारा, भस्मांकुर, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली इत्यादि ।

उपन्यास- रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन इत्यादि ।

नागार्जुन को साहित्य में उनके द्धारा दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक मैथिली कविता संग्रह के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया ।

(भावार्थ -

पौराणिक आख्यान है कि महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या अपने सौंदर्य के कारण इंद्र की कामवासना का शिकार होने पर अपने पति गौतम के शाप के कारण पाषाणी बन गई। शिला बनी अहिल्या राम के चरण-रज के स्पर्श से शापमुक्त हो गई। इसी पौराणिक प्रसंग को कवि नागार्जुन ने पुनः वाणी प्रदान की है ।)

~#~#~

“पाषाणी”

- नागार्जुन

आंगन से हटकर कुछ थोड़ी दूर
एक झोंपड़ी थी उत्तर की ओर
वहाँ पहुँचकर देखा अद्‌भुत दृश्य -
भू-लुंठित थी नारी-प्रतिमा, ओह!
ग्लानि-क्षोभ का वैसा करुण प्रतीक ।
देख सामने राम रह गए दंग,
मुँह से फूटा नहीं एक भी बोल,
वहीं धम्म से बैठ गए तत्काल...
हुए हतप्रभ और व्यथित सौमित्र।
निर्निमेष थे उनके दोनों नेत्र,
पाषाणी का मुखमंडल था केंद्र
इस प्रकार अवलोकन में
कुछ काल बीता।
तब कौशल्यानंदन और पास
आ गए, किया मूर्ति का स्पर्श।
खुली पलक, टिमटिमा उठी फिर दृष्टि,
हुए दीप्त सहसा गहरे दृग-कूप,

अधरों पर था स्पंदन का आभास,
पुनः कराया कर पल्लव-संस्पर्श,
फिर चमकी आँखे, फिर फड़के ओंठ ;
पाषाणी में किया प्राण-संचार -
"कौन देव, तुम मेरे हृदयाधार ?
सुनती हूँ करता अमरत्व-प्रदान
धनश्याम, बतालाओ, तुम हो कौन ?
पाषाणी में डाल दिए हैं प्राण।"
कहा राम ने होकर परम विनीत -
"कोसलेश दशरथ के हम हैं पुत्र,
राम-लखन-से साधारण हैं नाम,
किया राक्षसों ने भीषण उत्पात,
पूर्णाहुति तक पहुँच न पाये यज्ञ -
उन दुष्टों का ही करने संहार
महाराज से हमको लाये माँग
गाधीपुत्र, कौशिकमुनि, विश्वामित्र ;
उन्हीं महाकुल-पति का ले आदेश
निकले हैं अब देश-भ्रमण के हेतु,
देवि, हमारा दसवाँ दिन है आज

इस कुटिया में । हुई आप प्रकृतिस्थ
अहो भाग्य । मैं किन्तु पूछ लूँ नाम,
गोत्र और कुल...कैसा यह अभिशाप?
'गौतमदार अहल्या मेरा नाम
यहीं कहीं होंगे मुनि भी हे राम!
दिया उन्होंने मुझको यह अभिशाप -
'पर नर दूषित, पुंश्चलि, तेरी देह,
हो जाए निस्पंद कुलिश-पाषाण।'
किंतु वत्स, तेरे सिर पर रखं हाथ
सत्य-सत्य कहती हूँ परमोदार ।
साक्षी पृथ्वी, साक्षी है आकाश,
हुई नहीं संपृक्त किसी के साथ
कभी अहल्या अपने पति को छोड़ ।
धरकर पति का आकृति-रूप-स्वभाव
यदि आये कोई पत्नी के पास -
कहो तात, फिर इसमें किसका दोष ? -
फिर भी किया नहीं मैंने प्रतिवाद
रोष गरल की भांति हो गया व्याप्त ;
प्रबल ताप से लहू बन गया बर्फ,

ऐंठी जिव्हा, वाक्य हो गये बंद -
चेष्टाएँ भी रह न सकीं अनिरूद्ध,
धरशायिनी बनी, वत्स मैं, हन्त ! -
भग्नदीपिका, सुखी बाती और
चिर अवहेलित कुटिया निर्जन प्रान्त -
स्नेहदान का यह अद्भुत वृतान्त
सुन-सुन पुलकित होगा सारा विश्व ।
जय-जय कौशल्यानंदन राम।
पाषाणी करती है तुम्हें प्रणाम।"
लिए अहल्या ने दोनों कर जोड़
उठ न सकी, इतनी दुर्बल थी, किन्तु
लगा प्रवाहित होने अश्रु-प्रवाह।
"नहीं हुई थी अम्ब, आप पाषाण,
नहीं हुई थी अम्ब, आप निष्प्राण।
नहीं-नहीं अंतस्सलिला मरुभूमि -
सदृश आप भी रहीं चेतना-पूर्ण।
उसी समय हो गया मुझे विश्वास -
प्रतिमा है यह नहीं इतर-सामान्य ;
अब निश्चित है पति का अनुचित शाप

अम्ब, आपमें हो न सका संक्रान्त।

कैसे छुए किसी को कोई शाप

किया नहीं जब सपने में भी पाप?"

~#~#~

8. “खत”

~ गिरिजाकुमार माथुर

कवि-परिचय:~

हिन्दी के सौंदर्यवादी कवि गिरिजाकुमार माथुर का जन्म 22 अगस्त 1919 को अशोकनगर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनके पिता एक स्कूल में अध्यापक थे और वे कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे संगीतकार भी थे। उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव गिरिजाकुमार जी पर पड़ा। सने 1938 में उन्होंने ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज से बी.ए. और सन 1941 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया। बाद में उसी विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. करके वकालत करने लगे लेकिन उनकी वकालत चली नहीं। तब नौकरी की तलाश में दिल्ली आ गए।

वहाँ उनको आकाशवाणी में सेवा करने का सुअवसर मिला। यह समय उनके जीवन में बड़े संघर्ष का समय था। उन्हें एक और आर्थिक अभाव से जूझना पड़ा और दूसरी ओर पारिवारिक समस्याओं से निपटना पड़ा। फलस्वरूप उनका अनुभव बढ़ता गया और उनके व्यक्तित्व में तेजस्विता आती गई जिसका प्रभाव उनके काव्य पर पूर्ण रूप से दिखाई देता है आकाशवाणी में उन्नति करते-करते आप उसके निदेशक बने और अपनी योग्यता व कार्य कुशलता बताने में सफल रहे। अन्त में आप दिल्ल दूरदर्शन के उप-महानिदेशक बने और वहीं से सेवा निवृत हुए। आजक दिल्ली में रहकर साहित्य-साधना कर रहे हैं।

रचनाएँ :

गिरिजाकुमार माथुर ने तेरह वर्ष की उम्र में पहली कविता लिखी सन् 1935 में पहली बार उनकी कविता- "मैं आज लुटाता हूँ तुम पा जो कुछ सुन्दर इस जीवन में" 'कर्मवीर' में प्रकाशित हुई। उन पहली कृति है- मंजीर, जो सन् 1941 में प्रकाशित हुई। इसके पश्च जो रचनाएँ प्रकाश में आई, उनकी नामावली इस प्रकार हैः- मंजीर, नाश और निर्माण धूत्र के धान, शिलापंख, चमकीले, बँध नहीं सका, भीतरी नदी की यात्रा, साक्षी रहे बर्तमान मत छूना मन, कल्पांतर। 'पृथ्वीकल्प' के प्रकाशित अंग चेरोस्लोवाक सरकार द्वारा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार ।

~#~#~

“खत”

~ गिरिजाकुमार माथुर

खत निजी अखबार है घर का
अकेले का सहारा है।
मुहब्बत-दोस्ती की सुख-निशानी है।
प्रिय की उँगलियों गूथी
सँवारी अक्षरों की डोर
तन के बीच पंखुरि-पुल
उनसे मिलन आधा है।

वही है दूर की अनमोल मुद्रा-भेंट
यद्यपि सहज साधारन
जिससे उमगती मन में
अचानक अनकही सिहरन
लगता आज भी वह तेज चिनगारी
गिरी थी ज्यों उदास अशोक वन में
मुद्रिका प्यारी।

वही है मेघदूत नये जमाने का

वही है हंस,

दमयंती मिलन को पास लाने का

उनींदे नयन में अनिरुद्धमय

सपना उषा का है।

कमल को पंखुरी पर लिखा

गीत शकुंतला का है।

या शायद बना कोटा किसी दिल का

कि छूते ही खटकता है।

पढ़ते हृदय डरता है।

कभी आदेश, झिड़की या उलहना है।

कभी कुछ भी न कहना है।

छिपाकर बात लाया है।

किसीका नाम भर लेकर

क्रिसी के पास आया है।

खत हवा की लहर-सा आजाद है।

वह न बंधन जानता है।

हठ नहीं वह मानता है।

वह न जोर, दबाव, डर के

कायदे पहिचानता है।
वह नया हर बार ताजा
इसलिए रसवान है।
जो अचानक द्वार आए
वह मधुर मेहमान है।

वह तुरत बनता स्पंदन
तेज़ साँसें, वक्ष धड़कन
चकित नयनों में खुशी
डर, भेद, बेसब्रो, समर्पण
और फिर मन को उमेठन
याद की फिर स्मरण-घुमड़न
दूर देशों तक विछलती दीठ
सुनी नजर की बनता दुराशा है।

खत घरू संबाददाता है।
हर घर में निजी सुख-दुख कहानी
लिए आता है।
मगर मन चाहता है

वह जभी आए

हंसी लाए

खुशी लाए

चुटकी भर किरन लाए

न दुख की खाक वह लाए।

खत नये आलोक का पन्ना

बने हर घर में हँसी की धूप का झरना बने

स्वस्थ, साबित जिन्दगी का

आइना नन्हा बने।

~#~#~

9. “कात्यायनी की कविताएँ”

~ कात्यायनी

कवि-परिचय:~

जन्म :1 मई 1959 | गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

समकालीन कवयित्री कात्यायनी का जन्म 7 मई 1959 को गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। हिंदी साहित्य में उच्च शिक्षा के बाद वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से संबंद्ध रहीं और वामपंथी सामाजिक-सांस्कृतिक मंचों से संलग्नता के साथ स्त्री-श्रमिक-वंचित से जुड़े प्रश्नों पर सक्रिय रही हैं। बकौल विष्णु खरे ‘समाज उनके सामने ईमान और कविता कुफ़्र है, लेकिन दोनों से कोई निजात नहीं है-बल्कि हिंदी कविता के ‘रेआलपोलिटीक’ से वह एक लगातार बहस चलाए रहती हैं।’

कात्यायनी की प्रतिबद्धता और प्रतिपक्ष उनके जीवन और उनकी कविताओं में अभिव्यक्त होता है। उनका स्वर प्रतिरोध का स्वर है। स्वयं उनके शब्दों में— ‘‘...कवि को कभी-कभी लड़ना भी होता है, बंदूक़ भी उठानी पड़ती है और फ़ौरी तौर पर कविता के ख़िलाफ़ लगने वाले कुछ फ़ैसले भी लेने पड़ते हैं। ऐसे दौर आते रहे हैं और आगे भी आएँगे।’’ उनकी कविताओं का स्त्री-विमर्श जितना निजी है उतना ही सामूहिक। उनका विमर्श हिंदी के लिए मार्क्स और सिमोन के बीच का एक पुल लिए आता है, जिस पुल से उनका वर्ग-चेतस फिर पूरी पीड़ित आबादी

को आवाज़ लगाता है। भाषा के स्तर पर उन्होंने कविता में संभ्रांत और अभिजात्य के दबदबे को चुनौती दे उसे लोकतांत्रिक बनाया है।

चेहरों पर आँच', 'सात भाइयों के बीच चंपा', 'इस पौरुषपूर्ण समय में', 'जादू नहीं कविता', 'राख अँधेरे की बारिश में', 'फ़ुटपाथ पर कुर्सी' और 'एक कुहरा पारभाषी' उनके काव्य-संग्रह हैं। उनके निबंधों का संकलन 'दुर्ग-द्वार पर दस्तक', 'कुछ जीवंत कुछ ज्वलंत' और 'षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच' पुस्तकों के रूप में प्रकाशित है।

उनकी कविताओं के अनुवाद अँग्रेज़ी, रूसी और प्रमुख भारतीय भाषाओं में हुए हैं।

~#~#~

“सामान्यता की शर्त”

~ कात्यायनी

जिस गन्दे रास्ते से हम रोज़ गुज़रते हैं
वह फिर गन्दा लगना बन्द हो जाता है।

रोज़ाना हम कुछ अजीबोग़रीब चीज़ें देखते हैं
और फिर हमारी आँखों के लिए
वे अजीबोग़रीब नहीं रह जाती।

हम इतने समझौते देखते हैं आसपास
कि समझौतों से हमारी नफ़रत ख़त्म हो जाती है।
इसी तरह, ठीक इसी तरह हम मक्कारी, कायरता,
क्रूरता, बर्बरता, उन्माद
और फासिज़्म के भी आदी होते चले जाते हैं।

सबसे कठिन है एक सामान्य आदमी होना।
सामान्यता के लिए ज़रूरी है कि
सारी असामान्य चीज़ें हमें असामान्य लगें

क्रूरता, बर्बरता, उन्माद और फासिज़्म हमें

हरदम क्रूरता, बर्बरता, उन्माद और फासिज़्म ही लगे

यह बहुत ज़रूरी है

और इसके लिए हमें लगातार

बहुत कुछ करना होता है

जो इन दिनों ग़ैर ज़रूरी मान लिया गया है।

~#~#~

“सफल नागरिक”

~ कात्यायनी

दुनिया में जब घटती होती हैं रोज़-रोज़
तमाम चीज़ें – मसलन मँहगाई, भूख,
भ्रष्टाचार, ग़रीबी, तरह-तरह के अन्याय
और अत्याचार और लूट और युद्ध और नरसंहार,
तो हम दोनों हाथ फैलाकर कहते हैं,
‘हम भला और क्या कर सकते हैं
कुछ सवाल उठाने और कुछ शिकायतें
दर्ज़ करते रहने के अलावा !’
इस तरह हम धीरे-धीरे चीज़ों के
बद से बदतर होते जाने को देखने
और इन्तज़ार करने के आदी हो जाते हैं।
इस तरह क्रूरता हमारे भीतर
प्रवेश करती है और फिर
अपना एक मज़बूत घर बनाती है।
इस तरह हम
सबसे अधिक क्रूर लोगों के शासन में
जीने लायक एक दुनिया बनाते हैं

और सफल और शान्ति प्रिय, नागरिक बन जाते हैं

और हममें से कुछ लोग

बड़े कवि बन जाते हैं।

~#~#~

10. सबसे ज़रूरी सवाल यही है।

~ अरुण कमल

कवि-परिचय:~

प्रतिष्ठित कवि और आलोचक अरुण कमल का जन्म 15 फरवरी, 1954 को बिहार के रोहतास जिले में नासरीगंज नामक गांव में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा और माता-पिता के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। वे इन दिनों पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं। वहीं माना जाता है कि साहित्य के क्षेत्र में उनका पर्दापण काव्य लेखन से हुआ था। इसके बाद उन्होंने कई देशी और विदेशी भाषाओं की पुस्तकों और रचनाओं का अनुवाद किया है।

अरुण कमल ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के साथ ही अनुवाद और संपादन के क्षेत्र में भी काम किया है। बता दें कि उन्होंने मायकोव्यस्की की आत्मकथा और 'जंगल बुक' का हिंदी में अनुवाद किया है। इसके साथ ही उन्होंने हिंदी के युवा कवियों की कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया जो बाद में 'वॉयसेज' नाम से प्रकाशित हुई। इसके अलावा उनके नागार्जुन, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह की कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुए।

वहीं 'नामवर सिंह' के प्रधान सम्पादकत्व में उन्होंने आलोचना पत्रिका के लगभग तीस अंकों तक संपादन किया. साथ ही उन्होंने 'नवभारत टाइम्स', 'मराठी

सकाल' व 'प्रभात खबर' में सामयिक विषयों पर स्तम्भ लेख लिखे. बता दें कि 'लिटरेट वर्ल्ड' में साहित्यिक विषयों पर भी उनके स्तम्भ लेख प्रकाशित हुए।

अरुण कमल ने आधुनिक हिंदी साहित्य में मुख्यतः कविता और आलोचना विधा में रचनाएँ की हैं। वहीं उनकी कविताओं में बोलचाल की भाषा, नए बिंब और खड़ी बोली के अनेक लय छंदों का समावेश है। इनकी कविताओं में जीवन के विविध क्षेत्रों के सजीव चित्रण देखने को मिलते है। जिसमें वर्तमान शोषणमूलक व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश और उसे बदलकर एक नई मानवीय व्यवस्था का निर्माण करने की आकुलता साफ दिखाई देती है।

अरुण कमल आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि, लेखक, संपादक और अनुवादक हैं। उन्होंने मुख्यतः कविता और आलोचना विधा में लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। इसके अलावा उन्होंने कई देशी-विदेशी पुरस्तकों और रचनाओं का अनुवाद भी किया है। वहीं साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान देने के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, श्रीकान्त वर्मा स्मृति पुरस्कार और 'रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार' आदि से सम्मानित किया जा चुका हैं।

~#~#~

“सबसे ज़रूरी सवाल यही है।“

~ अरुण कमल

सबसे ज़रूरी सवाल यही है मेरे लिए
क्या हमारे बच्चों को भर पेट दूध मिल रहा है।

सबसे ज़रूरी सवाल यही है कि
क्या प्रसूति माँओं को मिल रहा है हल्दी-छुहारे का हलवा।

और दादा-दादी को हर रात दूध में रोटी?
सबसे ज़रूरी सवाल यही है मेरे लिए कि

हमारे नौजवान काम से लौटते थके तो नहीं ज़्यादा?
क्या हर बीमार के सिरहाने रक्खा है अनार

और हर बीमार को वही इलाज जो देश के प्रधान को?
सबसे ज़रूरी सवाल यही है मेरे लिए कि इतने लोग

भादों की रात में भीग क्यों रहे हैं
कहाँ गए वे लोग इन बस्तियों को छोड़ कर

हमारी गौवें क्यों खड़ी हैं कूड़े के ढेर में
इस अँधेरी रात में किसने फेंका मेरी माँ को घर से बाहर?

जिस देश में भूखे हों बच्चे, माँएँ और गौवें
उस देश को धरती पर रहने का हक़ नहीं।

~#~#~